→ संत काव्य की विशेषता।

संत शब्द का प्रयोग साधारणतः किसी भी पवित्र आत्मा तथा सदाचारी पुरुष के लिए किया जाता है और कभी-कभी यह साधु तथा महात्मा शब्द का पर्याय भी समझ लिया जाता है किन्तु, संत मत शब्द में संत शब्द का एक पारिभाषिक अर्थ भी हो सकता है जिसके अनुसार यह उस व्यक्ति का बोध कराता है जिसने सत् रूपी परम तत्व का अनुभव कर लिया हो। अतः संत शब्द का व्यवहार केवल उन आदर्श पुरुषों के लिए किया जा सकता है जो निस्वार्थ भाव से विश्व कल्याण में प्रवृत्त रहा करते हैं। इनके अतिरिक्त यह शब्द अपने रूढ़िगत अर्थ में उन निर्गुण मतों के लिए प्रयुक्त होता आया है जो दक्षिण के विष्णु वारकरी संप्रदाय के प्रचारक थे और कदाचित् अनेक बातों में उन्हीं के समान होने के कारण नाथ के कबीर आदि के लिए भी इसका प्रयोग होने लगा।

संत काव्यों के अंतर्गत रखी जाने वाली रचनाओं को गान प्रधान कहा जाता है क्योंकि उनके रचयिताओं का ध्यान जितना गान सौंदर्य की ओर जाता दिखता है उतना उनके शब्द तथा शैली में चमत्कार लाने की ओर दिशा गया नहीं जान पड़ता। संत कवि उच्च से उच्च एवं गंभीर से गंभीर भाव को भी सर्व साधारण की ही भाषा में व्यक्त करते हैं। उनका उद्देश्य जितनी अपनी कृतियों द्वारा सहृदयजनों का मनोरंजन करना नहीं रहता उतना सांसारिक प्रपंचों में पड़े हुए लोगों को सच्चे मार्ग का परिचय कराना रहता है। संत कवियों ने दूसरे के चरित्र या जीवन गाथा का वर्णन नहीं करके अपनी ही अनुभूतियों का वर्णन किया है।

संत उपदेशक पहले थे तथा

कवि बाद में। स्वानुभूति की अभिव्यक्ति करते समय वे प्रायः पूर्णरूपेण सफल नहीं हो पाए हैं जिसके कारण उनकी वर्णन शैली दोषपूर्ण बन गई है। वे किसी भाव को बार-बार प्रकट करते हैं या उपयुक्त शब्दों के अभाव में अत्यधिक रहस्यात्मक बना देते हैं। संतों ने आत्मा की सर्वरूपता तथा सर्वव्यापकता प्रतिपादित की है। संत काव्य तथा संत दर्शन पर नाथपंथ का प्रबल प्रभाव है। नाथपंथी कवियों तथा विचारकों के शून्यवाद, उनके द्वारा गुरु की प्रतिष्ठा तथा सृष्टि-क्रम, आत्मा, जीव इत्यादि के विषय में उनकी मान्यताओं से संत कवि अनेकशः प्रभावित रहे हैं। संत साधना में योग प्रतिक्रिया की जो धारणा रही है उसका मूल स्रोत नाथपंथी साधना पद्धति है। संत साधनाओं का भी संत मत पर प्रभाव रहा है। यद्यपि कबीर ने कहा है कि "तंत्र ना जानूं मंत्र ना जानूं, जानूं सुन्दर काया।" तथापि कबीर के पश्चात उनकी परंपरा में अवतरित तथा विकसित संप्रदायों में मंत्र साधना का स्वरूप मुख्य रहा। मलूक पंथ तथा निरंजनी संप्रदाय में इस प्रभाव को सहज ही लक्षित किया जा सकता है।

इस्लाम के प्रभाव के कारण संतकाव्य की विचारधारा पर एकेश्वरवाद का प्रभाव दृष्टिगत होता है। इस्लाम के समान ही मूर्ति पूजा तथा अद्वैतवाद का विरोध संत कवियों ने किया है। इस्लाम में सामाजिक असमानता को दूर करने की चेष्टा की गई है। वस्तुतः एकेश्वरवाद उस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता थी अतः कबीर आदि संतकवियों ने हिन्दू-मुसलमान दोनों को ऐकेश्वरवाद का संदेश सुनाया। अतः जनता को बहुदेवोपासना से त्राण मिला। इसके अतिरिक्त सूफी मत का प्रभाव भी संतकाव्य पर दिखाई पड़ता है।

संत काव्य में दाम्पत्य प्रतीकों की उपलब्धि सूफी दर्शन का ही प्रमाण है। इस संप्रदाय के साधनात्मक तथा भावात्मक आदर्श से संत कवि प्रभावित हैं। बौद्धों का दुःखवाद तथा शून्यवाद, वज्रयानियों की तंत्र साधना, सिद्धों की गुह्य क्रियाओं के रूप में उलट बांसियाँ तथा नाथ संप्रदाय की योगसाधना किसी न किसी रूप में संत काव्य में समाहित है।

संत काव्य में निर्गुण-सगुण से पृथक अनादि, अनंत, अनाम, अज्ञात ब्रह्म के नाम जाप की विवेचना की गई है। यह नाम जप साधना का मूलाधार है। इनके अनुसार नाम ही भक्ति तथा मुक्ति का दाता है। वस्तुतः भक्ति आडंबर विहीन होनी चाहिए। संत काव्य में मानसिक भक्ति को प्रमुखता दी गई है और वैधानिक की नवधा भक्ति का कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया है। इनके अनुसार प्रेम ही ईश्वर प्राप्ति का मूल साधन है। प्रेममयी भक्ति का उल्लेख करते हुए कबीर ने कहा है :-

"हरि रस पिया जानीये जे कबहुँ न जाए खुमार,
मैमंता ~~मैमनता~~ घूमत फिरै, नाहीं तन की सार।"

संत कवियों में अशिक्षित जनता में धर्म प्रचार की अद्भुत क्षमता है। इनका उद्देश्य है - मानव को ऐसे धर्म क्षेत्रों में बांटना जहाँ जाति संबंधी भेद न हो। संतों के साधना मार्ग में हिन्दू - मुसलमान सबका समान रूपेण स्वागत किया गया है इन्होंने जाति-पाँति, बाह्याडंबर तथा पाखंड सबका विरोध सशक्त शब्दों में किया है। इनका मूल मंत्र है -

"जाति पाँति पूछै नाही कोई, हरि का भजै सो हरि का होई।"

"पाहन पूजै हरि मिलै तो मैं पूजूँ पहाड़
ताके ये चाकी भली पीस खाय संसार"

कांकर पाथर जोड़ी के मस्जिद लियो चुनाय,
ता चढ़ी मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाए"

संत काव्य में गुरु की महत्ता प्रतिपादित की गई है। मोक्ष तथा ईश्वर प्राप्ति के लिए गुरु की कृपा अतिआवश्यक है। गुरु की असीम कृपा से ही समस्त वासनाओं, इच्छाओं तथा द्वेषों से रहित होकर जनकल्याण संभव है। वस्तुतः गुरु धर्म-भक्ति का दाता है और ज्ञान चक्षुओं का उद्घाटक भी। वह ब्रह्म से भी महान है —

गुरु गोविंद दोऊ खड़े का के लागी पायं,
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियो बताय।

संतों ने अपनी भावनाओं और सिद्धांतों को साखी के माध्यम से व्यक्त किया है। साखी शब्द संस्कृत के साक्षी शब्द का रूपांतर है जिसका अर्थ है "किसी बात को अपनी आँखों से देख सकने वाला"। इसलिए कबीर-बीजक में इस काव्य प्रकार का परिचय ज्ञान की आंखों कह कर भी दिया है। इन साखियों में प्रायः ऐसे ही विषय दिखते हैं जिन्हें संतों ने अपने दैनिक जीवन में भली-भांति समझ कर प्रमाणित कर लिया है, फिर अपनी निज की कसौटी पर पहले से ही कस चुके के कारण साधिकार व्यक्त करने की क्षमता रखते हैं।

भाषा की दृष्टि से संत काव्य सहज, सरल तथा कृत्रिमताविहीन है। संतकवि पर्यटनशील थे अतः उनकी भाषाओं में विभिन्न प्रदेशों की शब्दावली का समिश्रण है। इनकी भाषा जनसाधारण तक भावों को प्रेषित करने में समर्थ है किन्तु साहित्यिकता का सर्वथा अभाव दृष्टिगोचर होता है। यह भाषा सधुक्कड़ी है और अवधि, ब्रज, अरबी, फारसी, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती आदि से मिश्रित है। इन कवियों ने रस, अलंकार, छंद आदि बिल्कुल ध्यान नहीं दिया है फिर भी शृंगार, शांत, वीभत्स, तथा अद्भुत रसों की यत्र तत्र अवतारणा इनकी रचनाओं में दिखाई

पड़ती है। अलंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और अतिशयोक्ति अलंकारों के प्रयोग मिलते हैं। इसके अतिरिक्त साखी, सबैया, कवित्त, झूलना तथा पदों का आधिक्य दिखाई पड़ता है।

यह ध्यातव्य है कि यद्यपि इन्होंने मूर्ति पूजा तथा अवतारों का विरोध किया है तथापि जाने-अनजाने रूप में इनकी कुछ रचनाओं में सगुण तत्वों का समावेश हो गया है। कबीर सदृश अद्वैतवादी तथा निर्गुण दर्शन के प्रतिपादक कवि के काव्य में भी यत्र-तत्र सगुण तत्व के दर्शन मिलते हैं। दैयास, मलूकदास आदि की रचनाओं में भी यह तत्व दिखाई पड़ता है। उदाहरण के लिए इस संप्रदाय में सद्गुरु को ब्रह्म का अवतार माना गया है। सद्गुरु के चित्र की उपासना में सगुण तत्व का प्रभाव दृष्टिगत होता है। माला, तिलक, छाप आदि जिन उपकरणों की संतों ने निंदा की वही बाद में उनकी साधना के अंग बन गए। इसके पश्चात तो संतों की आरती होने लगी। तात्पर्य यह है कि संत मत के अनुयायी परवर्ती काल में कुछ अंशों में सगुण तत्व की ओर उन्मुख दिखाई पड़ते हैं।

माया का विरोध → संतों ने माया का विरोध किया है और मायामहाठगिनी से बचकर और सावधान रहने की विशेष प्रेरणा दी है। आत्मा-परमात्मा के मिलन में यह माया ही सर्वाधिक बाधक है। अतः संतों ने गुरुप्रदत्त ज्ञान और साधना के बल पर इस मारक तत्व से छुटकारा पाने की प्रेरणा दी है।

समासतः हम देखते हैं कि संत काव्य मानव जीवन की अनुभूतियों का सहज-सरल संकलन है। यहाँ सभी कुछ अकृत्रिम व स्वाभाविक है।